140
7

१४०
७

सङ्कीर्णपत्र समूह ।

Sankirna patra Samoohu

जानउरी ।। माघ ।। ३१ (1)

फिरफउरी ।। फा० ।। २८

मारच चै ।। दि ।। ३१

अप्रपरैल ।। बै ।। दि ।। ३०

मेह ।। ज्यै ।। दि ।। ३१

जून ।। अ ।। दि ३०

जुलाई ।। श्रा ।। दि ३१

अगस्त भा ।। दि ।। ३०

सितमर ।। कु ।। दि ।। ३०

अक्टोवर ।। का ।। दि ३१

नवंमर ।। अ ।। दि ३०

दिशम्बर ।। पू ।। दि ।। ३१

(2)

श्रीगुरु:

जगंधयेकेतकीनांवहतिभृशातरं
पर्णतःपिजल[illegible]भास्वादेति
जोकहूस्वलघुजदितलिता
र्मर्दितेचिधकरणारपातद[illegible]
व्यानोंजातिभूतिचिमचिम
कुसतेचमर्दिदरधात्दु तंतेसाश्
[illegible]जी ध्राशोमनींपावरम
गतनुजाराजमैजोग्याप्र
तिष्ठ ॥१॥

२

कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो द
धातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय
नमः ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वारा
ज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्य
माधिपत्यमयं समंतपर्यायी स्यात
सार्वभौमः सार्वायुषः आंतादापरार्धा
त पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराडिति

पञ्च९र्वैसाध्या:संति

ध्यानि मालि त्पारीलिवैश्वभो मया हृ
तानि प्रजापर्ते प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्य तं उ
श्वपमेव पुस्पांजली । पतेन पहमय
यं तदेवास्त्वानि धर्मो रिग्वपमां न्स्यं
संन्नतेहनाकं महिमानः सचेतैदेवाः
राजाधिराजाय प्रसँ [illegible] स्माधि. ने नमो
वयं वैश्रवणाय कुर्महे स म कामान कामम
श्र

हंतुम धुकेर भोजन धे भूस्तुष्मा वस्तु प्रेह से नोला स्म चुति मा स्यपा
म द द रा कांशे वे मराफा ग्ले कं। ॥ प्रदेश स्त के पर स्तु ग दे बुकुल तिशंप
पं धुनः कुं ॥ कां दं रं रा ... म ॥ सं वचग ज ल जे धुं ८ टा स्त री भोजनं ॥
स्रूलं पारा सुदर्शनि च द घतीं स्ते पूवा लप्र भां से वे सेरि म म दं नी
मे ह महालक्ष्मी स रै जे स्थितं ॥ २॥ घंटा स्त ल हला। जे रा खमु रा ले
न कं धुनः शायकं र स्ता जै दं ध तीं घनां त विलरा च्छीतां सुतु ल्प प्र
भां ॥ गौरी दे हस मुद्भवां ॥ जगता माधार भूतां महा पूर्वां म स्मरे स्वनी
मनु भजे शुंभादि दैत्या दिनी ॥ ३॥

म शिव

(4)

६ श्री

महालक्ष्मीप्रीत्यर्थे महाकालीप्रीत्यर्थे

गायत्रीछंदः

॥ श्राद्यचरित्रस्य ब्रह्माऋषिः महाकालीदेवता नंदजाशक्तिः
रक्तदंतिकंबीजं अग्निस्तत्वं ऋग्वेदमूर्तिं प्रथमचरित्रजपेवि
नियोगः ॥ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः महालक्ष्मीर्देवता
उष्णिकछंदः शाकंभरीशक्तिः दुर्गाबीजं वायुस्तत्वं यजुर्वेद
मूर्त्तिः मध्यमचरित्रजपेविनियोगः ॥ उत्तमचरित्रस्य रुद्रऋ
षिः महासरस्वतीदेवता अनुष्टुप्छंदः भीमाशक्तिः भ्रामरीबी
जं सूर्यस्तत्वं सामवेदमूर्त्ति महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तमच
रित्रजपेविनियोगः ॥ खड्गंचक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुं
डीं शिरः शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृतां । या

यावदेशेषाकानय त्रो आरि तं ष चः
लंघोध्वमान्ोन र्षं नोगकोंदृ रं
किंत्वाधिक सुपेक्ष
ते २
सासांक्रंः चिविंशा फोर्धचिं ऽपेनपु
वृत्तिः करोति कर्त्र वर्मादि यासा क्रिया

सूचै विभक्तिर्नैवास्ति व जौ सोदश्यते वादि
१ अल्पादि त्वबहुलं वा तत्सांकेतिकलक्षणं
सूचयंति वेदवंति अल्पाक्षरैः बहून्यर्थानि
॥ इति सूत्रं ॥ मयु

50

कोऽर्थः ६ श्रीराम १ करोति युद्धादिकं भाति
कर्त्ता: २

स एवः रामः दाशरथिः पूर्वं बभूव स एवः
युधिष्ठिरः राजा बभूव स एवः कौन्तेयः महा
त्यागी बभूव स एवः भीमो महाबलो बभूव
बिभ्यति शत्रवो यस्मात् स भीमः इह
नाम अस्मिन् व्याकरणशास्त्रे लौकिका
पं लौकिक शब्दसाधनाय यत्कार्यं मुन्यंत
त्कार्यं विदेवहुलं कोऽर्थः विकल्पेन भवति सः
अनिरुद्धः इमां सोदां कोऽर्थः उदां सहितां भ
मिमाददे इत्यादीनां प्रयोगाणाम् उद्धृता
कोऽर्थः दृष्टता न भवति

श्री मनोहरी

॥श्रीगणेशायनमः॥ (6)

॥रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनो॥
॥रमे॥सहस्रनामतत्तुल्यंश्रीरा॥
॥मनामवरानने॥१॥

॥मार्गंमार्गंमगयतिमग॥
॥हेतिरामेतिराम॥शोकं॥
॥शोकंगतवतिगतेलक्ष्म॥
॥णोलक्ष्मणोन॥नीतानीता॥
॥सुरसुरवधुहारस्कंधार॥
॥लंकासीतासीतातपति॥
॥तपनेरावणोरावणोन॥५॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] २०३ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३ [illegible] ०६ [illegible] ३

[illegible]

[illegible]

मौक्तिकाचपत्याचंपाकरवीर

(7)

समन्वितं चित्वा प ३ य माधुतं

मयानीप्रतिगृह्यतां

देवद्रुमरसोद्भूतः कृष्णागरिसम

न्वितः आनी[illegible]तोधूपंमयाधूपे

मयानीप्रतिगृह्यतां ॥ इति धूपं

सुंज्योतिः सर्वदेवानां तेजसां

तेजउत्तमं आत्मज्योतिः परं

ध्यामदीपोयं प्रतिगृह्यतां ॥ म

[illegible]सी ॥ नान्यासी ॥ ० ॥ पूगीफ

लमहद्दिव्यंनीगवल्लीद

लैर्युतं कर्पूरादिसमायु

क्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां

गंगात्रंसमानीतंसगरसंफलसे
त्र स्थितेआच प्यतंमाहमागे
रू ऐनासहितेनचे ॥ गंगामृ
स्वतिरेवाक्यवेदीनर्मदाजलैः
स्नानिचितासिप्रपद्येचितथाशां
तिप्रपद्ये ॥ ५ ॥ इति स्तोत्रं ॥ २
जयंती मंगलाकाली ।०॥ कपू
रा गहस्संघृष्टकुंकुमाद्रि
समन्वितंतेक सफासमापु
ष्टुंरेचनांप्रतिगृह्यतां ॥ रंजि
तोकुसुमाघेनअश्वताश्वे
श्वोतिशोपनोः मम्मेघांदेवि
दानेनप्रसन्नाभवसर्वदा ॥
इति अधनांतं ॥

(8)

सपने हु सोच मो हि दयो निर दई दई तल फलरतै
जयसे जल विन करिवया ।। कैदन संदेसो ओवो तोल मधुस
देन फोस वै मिलि हो रीलेन ग्रंगने हरे रिवया ।। पुघे स माचो
रन मुरवागरि कच्छ संदेसे क घु कागद लै पेरो गपढी
नो आरस रिवया ।। छतियसो पतिया मिलाय वे ठिवां
चिवे को जौ लोरवा लपरवांम तौ तौर खुलितैं गै ग्र रिवया ।।१।।

श्री राम (१)

विं नते स्द खेर हेता हो देखा
ना जाना अपने दिलवर के
रवार व रस्ते ने को ओ आना
जाना ।। रस्ते तेरे मियापीरो
की नजरे मानी हो चीदि नेत्ताव
खुदाई हि जौ तेरा आना जाना
तेरी तसवीर मेरे चसमो मर हो
ती मुझे याद आता है तेरे सु
रत फेरो सौं ना जाना ।। गर कोई
यारा अपने से रुग खाफ़ा
प ने रुग हो वे मैं नताकर के उसे
खुच मन न ना जाना ।। दुनी या
दारोज : श्री पाजीन है दादीन का
दास्ती है तेरा वः खुब नीवह

नाजानेगा॥ अयैपरी वरवस
कौ ताईः श्रीतेमहेसुर कौ
सजीतेमहाजरकीनु वाता
ऊनी सकें कीजेरादीसपर
नता नाजानां

नासहैदिलकीसकतेहैफीसकोसंमुम्हा
तेहै तुमरवोदिवानहोगयहोजान
कैवैषातेहौ तुमपारेना॥ रतैंतुजी
सजागयेमुजफोसवमालुमहैवी
[illegible]कौकुफरवकतेहौं [illegible]काहे
कोसंमुषातेहौ तुं औरजोवै
ठेरहैतौ मुंसतेमहजुरजेलौ
नयवेहैंमआतैहै तुम तोघव
राकेउठजतेहौ तु

लेबजिलेबआरामसेबैठेराहो
जातेहैंहमरा फिर नाओ वेग
कन्बी काहेका हमें बुलाते हो तुम
खुवारि

[illegible]

دو اجناوت

ماہ سہ

سہاداں کرداں اندراں ججوداں

ودہ لرہ ودہ لرہ

سہوناں شاہ لوسک

ودہ

ਸ੍ਰੀ

ਅ ਤੁ ਖੁ ਅ ਘੀ ਥੰ ਕੌ

ਘ ਹ ਫੁ ਜਿ ਨ ਰ ਈ ਸੀ ਸ ਨ

ੳ ੲ ਟ ਮ ਕ ਲ ਤੁ:

ਕ [illegible] ਨੀ ਰ

विनतेरे ॥ [illegible] मातनमुकट

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ۱٥ رجب ۱۲٦٥

[illegible]

ماهدیده

[illegible]

॥श्रीगणेशायनमः
यंपातुपिनाकपाणिः दोर्मू
लमव्यान्ममधर्मवाहुर्वक्षस्थ
लंदक्षमखांतकोव्यात्॥६॥म
मोदरंपातुगिरींद्रधन्वामध्यंत
मव्यान्मदनांतकारी हेरंबता
तोममपातुनाभिंपायात्कटिं
धूर्जटिरीश्वरोमे॥७॥ऊरुद्वयं
पातुकुवेरमित्रोजंघायुगंपुं
गवकेतुरव्यात् जानुद्वयंमेजग
दीश्वरोव्यात्पादौममव्यात्सुरवं
द्यपादः॥८॥महेश्वरःपातुदिनादि
यामेमांमध्ययामेवतुवामदेवः

त्रियंबकः पातुतृतीययामे वृष
ध्वजः पातु दिनांतयामे ॥१८॥
यह स्तुति पंचम पत्र की है ५

लेसुधाकोना श्रीगुरु जोलुटिकेव-
सुधासुख
पो मुखतरो है १
प नगदद्दपसुनग नागर नदी नदै लो
क रचै हि स चारी केशव देव अदेव रचे
नर देव रचे रचना नने चारी र चि के नृ
प ना लव सीवल वीर है कृति कृ तो
भयो बुत धारी है क रतो अपनो प्रसा
ना लि दैइ करता र [illegible] दू हू कर तारी
श्रीहरि
दीदपदीकुम ला गेदु मे फल ताये से टक
को चाँद नीने ना रा है॥ वेदि मु अंक
चुनै तेहि उपर का त्रि नकी रा तलात
न गा सा है॥ भा ई मै क थ्यक है के वि
के सो पिंडीत हाय करै ठि गन्या
रो न रंगी बृहन्न आना र श्री फल ए
कै वर्ष लगे फल चो रो॥ २०

सिंघन केवन मा वसिकै जल
मा ब धसिकै विघ्न गहि लि जै नौ
खजुरन का नरमै मेलि कै जनि कै
जहर हलाहल पिजै मुत पचासि
के पै ठिगवे ठिकै सा पके मुखमे
आगुरी दीजै एते ओपाय
सबै कीजै पन मुर ख मित्र को संघ
न किजै थ/ कुंजते कोमल ता लये सुम
घलै मैं लैगुलावते इद्र तपका सैलै
उरिग जैसो है र पैरति औ नंद
सो चातुरी सुजानन सो नीरलै
निदानन सो कै तुकुनिवे रोके
ठाकुर कहै तेयो मसालो विघ
कारिक गगारचना नीहार कै नहोत
चिचेरो है कुंदनको रंग लै सवाद

(12)

कंधरोरू

चोपरंध्रेनपेच स्य ॥श्रीगणेशाय नमः॥ उदरे

आवर्त्तौ द्वौ वक्षसि द्वौ च शीर्षे रंध्रे द्वौ द्वौ चोपरंध्रे

तथैव स्यादेकैको भालदेशे प्रपाने शस्तावर्त्ताः

स्युर्ध्रुवा स्युर्दशैते ।

कपोले: कंठावृि फलीली गाढि

पृष्ठेके पीठिपर

प्रोथास्रुपातौ सनेगंडैकक्षौ हृत्क्रोडकक्षौवास्फिजिजा

मस्पो धवमग

नु जंघे पक्षेषु शंखेकंकुदे करेचयेरोम जाता जिव्हेते च

लिंधा: ॥२॥

मस्तके वृक्षाहि

स्तुवे ललाटे स्वे रासि प्रपाने द्वित्री नि-चत्वारि पि रोमजा

नि स्वसंस्थितानि श्रियप्रावंहति इत्याह तथ्यं मानिसा

लिहोत्र: ॥३॥ वक्षोद्रुवावर्त्तेचतुष्ट्यं स्यात् कंठेमवेत्यस्य

सो

तेचमानः श्रीकद्धीकी नाम हयः समर्त्तः श्रीपुत्रपो

त्रार्थं विरुद्धिदः स्यात् ॥४॥ हीनाधिकैर्य दशानां

अंक से पृच्छितान्न

मश्कैः सहैवदंतेर्वसौ श्र जाता: स्कन्याधुराख्येक

विलंवमश्का तेस्वामिनोड्ः खकरातुरंगाः ॥५॥

(13)

॥श्री॥

॥भजन॥ ॥अबलौं नसानी॥ अब ना नसैहौं॥
॥अ०॥ रामकृपा भवनिसा सिरानी जाग्यो
॥फिरि न डसैहौं॥१॥ पायौ नाम चारु चिंता
॥मनि उर कर तें न षसैहौं॥ स्याम रूप सुचि
॥रुचिर कसौटी चित कंचन हि कसैहौं॥२॥
॥परबस जरनि हस्यौ ईन इंद्रिन निज बस
॥ह्वै न हसैहौं॥ मन मधुपरि पन करि तु
॥लसी रघुपति पद कमल बसैहौं॥३५

…।२८।३८।खु।०।०।८८।…।१…०८८।…

१४। मं। २०। ५८। वि। ४। ८। शि। १२। ०। ५२। ३२। १…

१५। बु। १६। ८। ११। ३। ०। ५८ ५६। ३४ शि। १४। १५। ३२। २८

र	मं	बु	बृ	शु	श	रा
१	४	९	६	३	०	२



।स्फुटकादशस्पः

१। ध्रु। १२। २०। श्रा। ५४। ५४। सा। ८। १६। ३२। २…

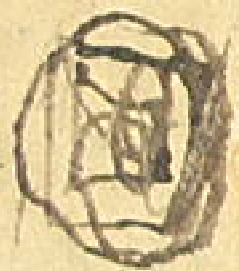
२। श्र। ८। १२। पु। ५६। ३१। …

३। …

तिसितीगति बातिलांपलापता
परिापपुंमापधा [illegible] परिष
षातुड तिुाति सुते पि ती॥

ल०क्ष्मी

१



(15)

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमधुसूदन उवाच ॥
गृहाण कवचं शक्र सर्वदुःखविनाशनं
परमैश्वर्यजनकं सर्वशत्रुविमर्दनं ॥१॥
ब्रह्मणे च पुरा दत्तं संसारे च जलप्लुते ॥ यद्धृत्वा
जगतां श्रेष्ठः सर्वैश्वर्ययुतो विधिः ॥२॥ बभू
वुर्मनवः सर्वे सर्वैश्वर्ययुता यतः ॥ सर्वैश्व
र्यप्रदस्यास्य कवचस्य ऋषिर्विधिः ॥३॥ पंक्तिश्छं
दश्च सा देवी स्वयं पद्मालया स्मरः ॥ सिद्धैश्व
र्यजपेष्वेव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४॥

फ सै के च फे च की स प ग्हि रे स
तृ षसा री रचित किनारी जामे
श्रवि घु न राति है॥ वउेव उे मे
त न की नथ ना सिका मेसो है ही
र न को हाउ हिय फ लुन न नासा
भाति है॥ धुन के मनोथ मे
मग नसु वं सक है जाकी छात
ति आगे हं स गति हति जात्व
ै ति है भारमनवरमी र हार
त चु को र न को तेवर सवान
यो चंद्र मु खी जति है॥ ग्ग

वस्यंजनवस्यंसर्वकार्यंवसिकरंद्विध्य
तजमवा [illegible] प्नुतिसीघ्रमाप्नुयावघनं
ग्रहरोगविनासेचसर्वकामफलंप्रदं इह
लोकेसुखिम्भूत्वात्तदिस्मुपरमंपदं इत्ति
ब्रह्मांडपुराणे अंवकेशरुद्रनामस्तोत्रसं
पूरणं ॥ ॥ अथश्रीरुद्रशवनमस्तोत्रमंत्र
स्यअकस्मपरऋषीः श्रीसरदसीवोदेवता अनु
ष्टुपछंदः श्रीसदासीवप्रीत्यर्थेजपेविनि
योगः अथध्यानं ॥ गतेरोगगतंदुखंगतंदारिद्र
मेवच ॥ अगतः सुखमाप्नोतीमंरुद्रशवदर्शि
नात् ॥ प्रथमंचमरुदेवं ॥ द्वितीयंचमहेश्वरं त्रि
तीयंशंकरंशंकरंनाम ॥ चतुर्थंवृषध्वजं
पंचमंकृत्तीवासंच ॥ षकामांगनाशनं ॥ सप्तमं
देवदेवंच श्रीकंठ्युमंसप्तं तत्र्यपं ईश्वरं नाम
दसमंपार्वतिप्रियं रुद्रमेकादशंनमरुद्रसंशि
वम्स्यप्यातं ॥ इतिश्रीब्रह्मांडपुराणेशिवरुद्र
शनामस्तोत्रसंपूर्णं ॥ श्री ॥

(16)

॥श्रीगणेशायनमः॥ॐ॥ अस्यश्रीवेंकटे
॥शद्वादसनामस्तोत्रमंत्रस्यब्रह्माऋषिः श्रीवें
॥कटेशोदेवता अनुष्टुपछंदः श्रीवेंकटे
॥शप्रित्यर्थे जपेविनीयोगः॥ध्यानं॥
॥श्रीवेंकटेशमतिसुंदरमाद्यमीशं श्री
॥लक्ष्मीकांतमरविंददलायताक्षं प्राण
॥प्रियपरमकारुणिकावुरासिवृंतेवशवंद्यम
॥म तंवरदंरमाय॥ अखिलविभुदवंद्यं वि
श्वरस्यसुरेशं अभयवरदहास्तंकंज
जाक्षं रमेशंजलधरनिभकांतिश्री
महीशंश्रीसमेतं परमपुरुषमर्च्यं वेंक
कटेशं नमामि॥१॥ॐ॥नारायणंजगन्नाथं
वरिजासनवंदितंस्वामिपुष्करिणीवासं
शंखचक्रगदाधरं पितांबरधरंदेवंग
रुडारुढशोभितं सूर्यकोटिसमंतेजक
मलायतलोचनंईदिरारुणगोविंदसोम
सूर्याग्निलोचनं विश्वात्मानंविश्वलोके
शश्वजयं वेंकटेश्वर द्वादशईतानिना
मानि त्रीसंध्यायःपठेन्नरः दारिद्र्दुःखनि
र्मुक्तोधनधान्यस्ससमृतं द्विदराज्य

(17)

[illegible]

गरेवजेगुँङाअलवेलैहैनेवेलचीचकर
अलैलैअलगरनङॉँ गहैं ॥ नाचातिचा
लतिचलछुँछु रदहोनेदुरछँछ नात
छुँछुनिवजावेतमुहु चंगहै॥ सा हेवसि
सिगरङीलिसैदपुँसयरिंमे उयातछु
लेवजपवनपछियोकेसेंगले॥ जमति
जपुँहतिलचचकुतिफाकवैतमुरफा
थीरपुतिसपकेंगहै॥

१००।

(18)

२५ २५, २५ २५॥ २५
२५ २५ २५॥ २५ २५ २५२५
२५ २५ २५ २५ ॥ ८

श्री राम १

त्रिदृशैशि सम्भूद्भवनाग्न्य

भिरतं सरदसादरताकरर

सिध्रु भम भजेतांकृलि

नांद्दारितादालितं लालिताल

लिताभपदंसुमंजे

بالاتر پرشندرب انگریز اکنس جی
رام ادین لالہ بہادر

(۱۹)

[illegible] اشد

श्री:

[illegible]

वीलाश जो षाइ तो कुत्ते के कान का
है कुत्ता जो षाइ तो मारै सिंघजे करा
जाजो षाइ ठुका ई कां रै गासके रै
यत जो षाइ तो ल ऐ चाहैरा ज्ञसे
मदि जो षाइ तो कमीनि कडेर
करै कमीनि जो षाइ तो माग गए
जके वीज या ~~जो षाई तो म~~ [illegible]
~~जो ए जक~~ [illegible] से घे तग नची रया
जो षाइ तो मरै कु है वाज के

कायथउतमज्ञात
हैचातनमेपवीन
कौसमैयाकौनहैसारहि
पीयसीमीनजत्नसुन
वानसी कीतानजनगेपस
वमोहेआचलचलेचत्नथ
केजीउजत्नथवकेमोहे
वाजीआनठतमातिजवमु
धारिनंदकेनंदमकरिछपा
छीमरातिमैचिरथरामचंदके
काहेकोथकृत्यनकविथा
केजेमुननीरजवतालफरतव
फरवाहेरगीहिसारहिपीय
सीमीनजवं

٤			١
	٢	٣	

(20)

٨	٧	٥٩	٦٠	٦١	٦٢	٢	١
١٦	١٥	٥١	٥٢	٥٣	٥٤	١٠	٩
٤١	٤٢	٢٢	٢١	٢٠	١٩	٤٧	٤٨
٣٣	٣٤	٣٠	٢٩	٢٨	٢٧	٣٩	٤٠
٢٥	٢٦	٣٨	٣٧	٣٦	٣٥	٣١	٣٢
١٧	١٨	٤٦	٤٥	٤٤	٤٣	٢٤	٢٣
٥٦	٥٥	١١	١٢	١٣	١٤	٥٠	٤٩
٦٤	٦٣	٣	٤	٥	٦	٥٨	٥٧

(21)

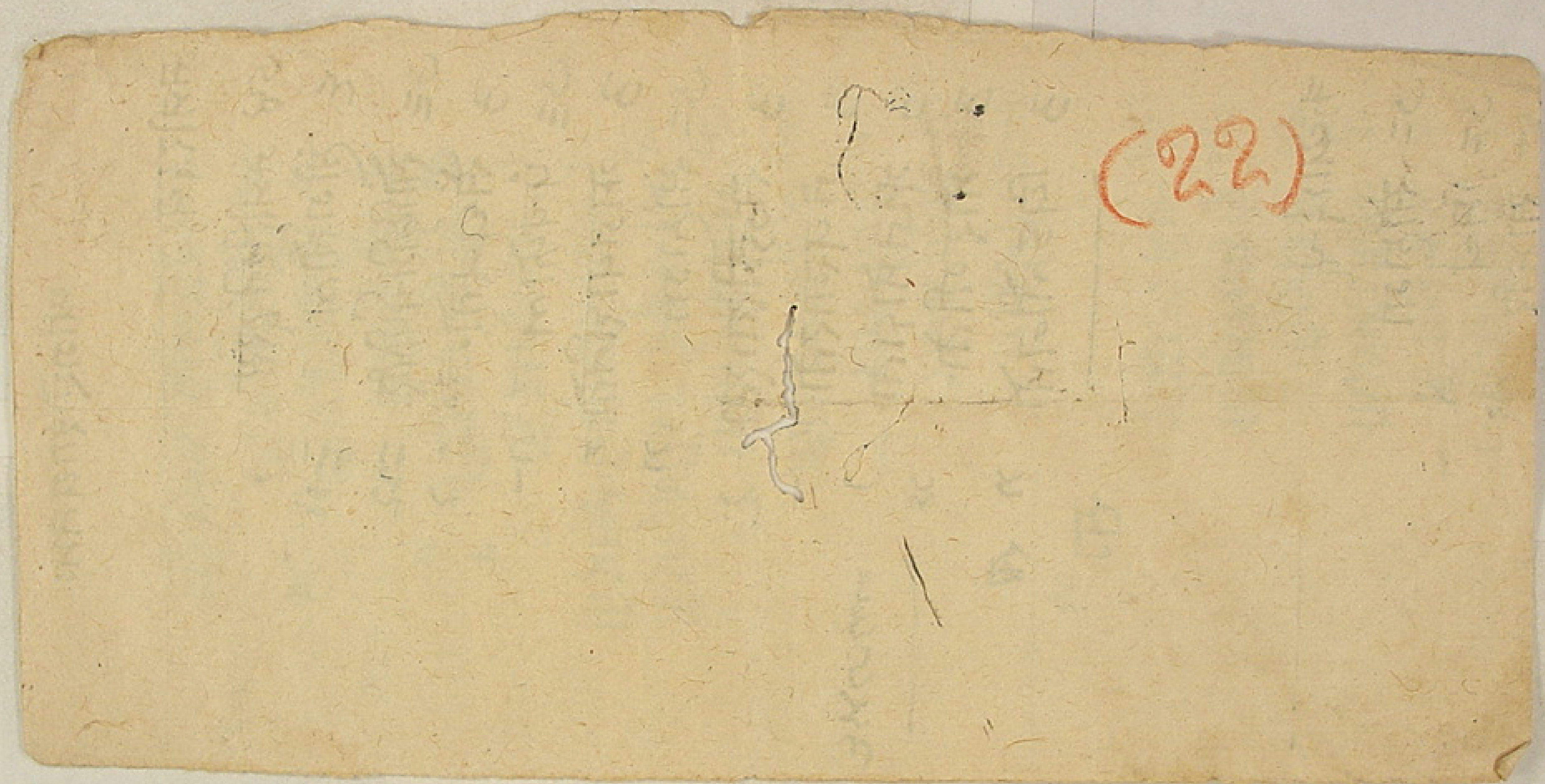
दूषनदुवीस॥प्ररुभूषनहैचौसठीसत्ती
निगुर्को नेवरनिवोजामेलहिअतुहै
॥ग्यारहसैवावन्नेजेभेदतीनिनाथि
काके कविकोकव्याकरनीयुतच
हिअतुहै॥पिंगलप्रवीनवरसभा
जितभाषाश्रुमकेवलराकतिहीको
वरनहिअतुहै॥शीलकोसुभावे
अनकहिउपमाहल्यावैसबहीको
भावैकवितासोकहिअतुहै॥१॥

प॥ पानीकेबुंदतेपोषनकैप्रतिपालको
जहाँजठ राखीनिघेरे॥
गर्भकेवासमेतासमेतोपरहाजुरही
रहोवेर आवेरे॥ताहिविसारिके
संतन॥ तूँकितहोतफिरेदरहीदरवे
रे॥ सोप्रभुहैकहूँनाहिगयोजिनपेट
मेपरभरोजनतेरे॥२॥ आंत

औंनूग हू ॥नृ ॥फोर ॥फेर फर ॥सिकु
॥सि विन ॥[illegible]॥ अयन ॥[illegible] ॥नयन
॥ना ॥र यनू ॥ ॥ ॥ ॥

मोह रं ॥सर्वप[illegible]॥र वि रवि अल ॥
रघिः सनि ॥ ~~यमदि[illegible] अल~~
यमद्दिसौवल ॥ यमदिसुनिरज
वसहवनरमनं सौवलयी
लफजयीलहेज ॥

[illegible]


(22)

श्रीगणेशायनमः

जंबीरद्रव

ऽ४ जंबीरीनिंबूरस
६ हींगतोल ≡॥
ऽ≡ सोंठिमिर्चपीपरि ≡॥
३ सैंधवतो० ॰ २
ऽ≡ पंचकोल १—
३ अजवाइनितो० ॰
ऽ= सोहागा २)
३ सज्जीखारतो० २
३ जवखारतो० २=
३ अजमोदातो० १ ——ऽ४६
३ भारंगीतो० ॥
३ बिडलोनतो० ॥ सा
सा

कन्यादिच्छ

ऽ= सोहागा
ऽ= मिर्च —२
ऽ- सांभरि ०२

३ सज्जीखारतो॰ -३
३ जवाखारतो॰
३ अमिलीखारतो॰
१॥ सेंधवतो॰
१॥ शंखभस्मतो॰
ऽ१ चनेरखारसेर

कव्यादिवल्लभ
ऽ५ अदरखसेर
ऽ१ सेंधावसेर
ऽ१ निंबूकागदीरससेर
३ अमिलीक्षारतो॰
३ तिलकीलकरिक्षारतो॰
३ लटजीरालालेक्षारतो॰
३ जवाक्षारतो॰
३ सज्जीखारतो॰
३ मिर्चतोले
३ चित्रकमूलतो॰
३ पिपरामूल तो॰
ऽ१ दसीकठोर गाईकसेर॰

मसाला

डा जीरासपेद

१ पिपीरि   डा गंधकआंवला

१ सिंघार   ॥श्री गणेशजी

१ शकर   १) रूमीमस्तगी तो

डा। गोंदु   २) वाईवीडंग तो

मरे

डा धानिया   २) कालीमीरीच तो

२) माजूफल तो

२) चीणाथोप तो

२) फटकरी तो

डा। सीरकामसाला

(23)

श्री

एक ही सेज मैंरा अधिक मांच्च वैं चाय तैं सो इसु माय
सतो नै ॥ पारय मत्रक विकान्न को मच्च मैं रा एक हि
यत पात न हो नै ॥ ह्यै है न सा वरी सावरे सो मि लि वा वृ री
वात सिरवाइ है को नै ॥ सै नै को इं एक स वृ दी त गै पे क
सवटी क रंग त गै न हि सो नै ॥१॥ मो र ते सं कल इ मा वरै
दे ति है अवसर वीतत जय से म हि नै ॥ पीर पराइ हु वजा
नय कह कि जा नै मत का वि का न्त त्र विनै ॥ का ग द को
रो मैं दी को नि हा रो क रि क च न कै रंग वो रै न विनै ॥
एरे चितेरे वि तेरे कि ते क दिन मित्र को चित्र न तैं लि
खि दी नौ ॥२॥ व च री चा ते च कै खि न वु के न तु त न
… तै सनि तै

(24)

[illegible]

श्रीगारो नायनीकेसत

होतनाइकानायकहिआलंचितश्रृंगार॥
तातेवरनोनायकानायककै प्रति अनुसा
र॥१॥नयभेद॥दोहा॥उपजतजाहिविलोकि
कैचितबीचरसभाव॥ताहिवषानतनायका
जेप्रवीनकविराव॥ कवित॥कुंदनकोरंगफी
कोलगैझलकैअतिअंगनचारुगुराई
आंखिनमैअरसानचितवनमैमंजुविला
सनकीसरसाई॥कोविनुमोलविकातना
हिंमतिरापलियेमुसक्यानिमिठाई॥
ज्योंज्योंनिहारियेनियरेव्हैनैननसोंत्यो
षरीनिषरैसीनिकाई॥१

(25)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥श्रीगुरो:

॥रेवतेश्वर जु देखि कैं मंसयहारे ॥
॥मंदिर पुरंदर कौ मंन अंदर सो
॥दुरंदर होय जात है ॥ लज्जित
॥होय कावीं दुआरके विदसा
॥वज वदेखे अंदर वंदरे इ
॥सुंदर रंग धाजत है ॥१॥ श्री
मअरु प्राचीदिशि चंडी अरु
नंदि अरु चंडीकासुत श्रंडी
कीगाति अनंग हु हरात
है ॥ कहत कविस्यो लीर
मे झांभज है तै अध मअ
ज्ञा नपै भारो सो तेरे चरण
को पायो जा है ॥२॥ श्री

॥श्रीगणेशायनमः

॥अतुलितबलधामं स्वर्णशैला
॥भदेहं दनुजवनकृशानं ज्ञा
॥निनामग्रगण्यं सकलगुणनि
॥धानं वानराणामधीशं रघुप
॥तिवरदूतं वातजातं नमामि १

(२८)

राम

धीज मेहं वन्दे हमल्पमतिराम रु
चि र्द्धि जो [illegible] वै २ ॥ दीनार्त्तिनाशन
परा परा सत्यशीलं श्रीहेमनाम गुरुरूप
स्प्यासमेतम् उच्चार्यमाणमिह वितारम ३ वंद्य
न्दे हमल्पमतिरामरु चिर्द्धिजोवै ४ पापाब्धि
पारगापपलायन सिंहनादं वैकुण्ठनामस
ततं परिगीयमानम् [illegible] तेस्यान्मनोयु
लसुन्दरकजपादं वन्देहमल्पमतिराम
रुचिर्द्धिजोवै ५ विष्णोः पदाब्जमतनं दुरि
तौघनाशं भक्तोस्य हृद्यविलजाच्युतमोदि
नेशम ~~[illegible]~~ दैवारिरां कुलविनाशनव
न्हिदावं वन्देहमल्पमतिरामरुचिर्द्धिजोवै ६
पविष्ठ
ग.ऋणे [illegible] यापीडि [illegible] विकलो [illegible] ष्णापावले
म्बनवसं [illegible] यजतेन पान्यः एगाद्यनेकभय
[illegible] यान्नतथाजपादं वन्देहमल्पमतिराम
[illegible] रुचिर्द्धिजोवै ७ शंखौ पुरागमयवचि
[illegible] न्हितमीशपादं लोकाभिरामकरुणा
कर विश्वसारम् सत्कल्पितं भुवनेम
तोनराखिलाशिं वन्देहमल्पमतिराम

भिरा धारो धारोनिरवपरिहारी सरगुरो
खंपा चे वि ह्मो व मलचर तो ष्ठी तिमधि
धां सुदीनं मां वि छि लपणातरमध्ये तिल
पताम॥ पुमे भवन्चो। को नोन्यस्त्वमपि [illegible] ज
गतां फलनवि मु:

श्रीगणेशाय नमः वैश्यं ज्ञानदयासिंधुं रगास्यौनचंग्गणाः सेव्यतां मेत्र
रः सु श्री पुचा मैतापाचं ॥१॥ माः मा ह्लीतं वाशिकं हि प्रैवतिसं प्यनतैः ॥८
[redacted] च्यतैव गौं कैनी नहिं गत्रसा सनें ॥२ श्रीः

(२४)

कृतोर उदर श्रीगुरु:

॥ श्रीं रि • श्राव त्तोद्वाव त्तसिद्वोच्यशीर्षरं
धे द्वौ द्वौच्यौपैरं ब्धूं तथे यस्माद्कै को मा
त्र देशे प्र पानेशास्ताय त्तो: स्मुधु वास्माद
शो ते ॥ १ ॥

रि
थूथुनपर पीठिपर कपोले कषद्र

फीली
प्रौ थौ सुपात्तों मनगं डे कै धौ ह का क शोषरिफजि
जिजानुजंघे पुरेषु षांरवे क कुदैक हे च येराम
जाया जिह्वच निंघा: ॥ २ ॥ सर्वे लस्माद्दे • हुरसि
प्रपने द्वित्री निच त्वा र्षिपिरो भाजानिस्य संस्थि
ता नि श्रि य भाव हं तिरस्माह थ्यं मुनि सालिहा
त: ॥ ३ ॥ व त्तोद्भवाय त्तेच तुष्कयं स्या कं ठे भवे
ल स्य तु रोच भा: न: श्री का [illegible] त्त फी नाम हय:
स भ त्तुं: श्री पुउपो जार्थ [illegible] षिवृ द्धि द: स्मात
॥ ४ ॥ हीनाधिके ये द शानां ङुः सुछ्के: सहै वय
तैर्य घरा स्व जाता: श्र न्याधु वा स्थे क विलं च
तुष्क तेस्या भिनो दु: कराातुरं गा: ॥ ५ ॥ ०००

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गुरु: जी श्री रामजी राम

[illegible]

[illegible] सं०१८[illegible]

B/40

7/13

(29)

श्री

वारिवारि जात पारि जात वारि जात
होउ प्रवाल्न की कमाच कुहिला
ती है ऽप्रापनाघरस्यात ऽप्रापतापसी
मृत्नोतत्न स्त्रिमात्निवगृत्नावकी
गरूरगरकाती है राम जी सौ कवि
त्ति है देखत प्रकासहोत पावकी प्र
राण्ली पास पास है वित्नाती है
राधा ठकुराइनि के पापन के तीर
कवि उत्तो मकुराती स्त्रिसिपाती
फिरि जाती है । फः चरति इ
स त्र फ से फै न यो गो भवति ।।
फ स्पाइ ति हे ह्य मकेस्प च रति
ति चारे सा यो गो भवति ।